भूण्डा महायज्ञ तथा 'चार ठहरी पांच स्थान' की स्थापना

VIKAS KUMAR
Research Scholar Department of Music, H.P. University, Shimla

सार संक्षेपिका

हिमाचल प्रदेश को 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है। यहां पर अनेक प्रकार की देव परम्पराएं प्राचीन काल से चली आ रही है। ऐसी ही अनेक देव परम्पराओं में एक है 'भूण्डा महायज्ञ'। इस परम्परा का संबद्ध भगवान परशुराम से माना जाता है। भगवान परशुराम ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने तथा लोगों को महिकासुर नामक राक्षस से मुक्ति दिलाने के लिए भूण्डा महायज्ञ का आयोजन किया था। भगवान परशुराम ने देवी–देवताओं की आराधना तथा स्थापना कर बस्तियां बसाई थी। इन बस्तियों को 'चार ठहरी पांच स्थान' के नाम से जाना जाता है। इन्ही देवी देवताओं को 'भूण्डा महायज्ञ' के लिए सर्वप्रथम आमन्त्रित भी किया जाता है। 'चार ठहरी पांच स्थान' के देवी–देवताओं के बिना भूण्डा महायज्ञ सम्पूर्ण नही होता।

बीज शब्द

महायज्ञ, भूण्डा, चार ठहरी पांच स्थान

शोध कार्य का उद्देश्य

श्शोध कार्य को सफल बनाने की कुंजी उसके निर्धारित लक्ष्य एंव उदेश्य पर आधारित है। शोध कार्य की योजना में क्रमबद्धता सिर्फ उदेशय के निर्धारण से ही संभव हो सकती है, इसलिए इस शोध कार्य का उदेश्य लोगो को पुरातन संस्कृति से अवगत कराना है।

सम्बन्धित साहित्य

नागेन्द्र शर्मा की पुस्तक हिमालय का उतरांचल रामपुर बुशैहर में भूण्डा महायज्ञ से संबधित जानकारी मिलती है। इस पुस्तक में भूण्डा महायज्ञ के इतिहास संबधित कुछ जानकरी प्राप्त होती है। शास्त्री लोकनाथ मिश्र द्वारा रचित पुस्तक में भी भूण्डा महायज्ञ संबधित जानकारी मिलती है। इस पुस्तक में भूण्डा महायज्ञ क्रम का विस्तार में वर्णन किया गया है।

भूण्डा महायज्ञ

भूण्डा महायज्ञ का सम्बन्ध परशुराम से है। भगवान परशुराम रेणुका माता व ऋषि जमदग्नि के पुत्र थे। ऐसा माना जाता है कि भगवान परशुराम स्वभाव के अत्यन्त क्रोधी व घुमक्कड़ थे। परशुराम जी के यौवन काल में ऐसी घटना घटी जिसने उनके स्वभाव को और भी ज्यादा उग्र बना दिया। परशुराम के पिता ऋषि जमदग्नि के आश्रम में कामधेनु गाय थी तथा सहस्त्रबाहु नामक एक निरंकुश शासक उन दिनों उतरी भारत में राज्य करता था।एक दिन राजा सहस्त्रबाहु शिकार खेलने उन्ही वनों में जा पंहुचा जहां ऋषि जमदग्नि का आश्रम था। ''ऋषि ने राजा को भोजन के लिए आमन्त्रित किया। राजा ने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। राजा और उसके सैनिकों ने मनमाने सुस्वाद व्यंजनों को जी भर खाया

तथा ऋषि के आतिथ्य की प्रशंसा की। राजा एक निरंकुश प्रकृति का शासक था। उसने अपने सैनिकों को आदेश देकर स बात का पता लगाने को कहा कि ऋषि ने इतने लोगों को मनचाहे भोजन व आतिथ्य का प्रबंध कहां से किया। जब सैनिको ने इस बात का पता लगाया तो उन्हे ज्ञात हुआ कि वा सब 'कामधेनु' गाय का चमत्कार था। राजा ऋषि से कामधेनु गाय की मांग करता है, ऋषि गाय को देने से साफ मना कर देता है। इससे राजा क्रोधित होकर अपने सैनिकों से ऋषि की हत्या करवा देता है।''[1] परशुराम के लौटने पर माता रेणुका पूरा घटनाक्रम बताती है। परशुराम अपने मन में क्षत्रियों को खत्म करने का ठान लेते है।

चार ठहरी पांच स्थान की स्थापना

परशुराम जी ने अस्त्र शस्त्र को प्राप्त करने के लिए शक्ति की आराधना की तथा देवी को प्रसन्न किया। यह आराधना उन्होने अपने पिता के आश्रम से दूर चन्द्रवंशी राजाओं की सीमा के अर्न्तगत सतलुज नदी के किनारे वनों में किया था। उस क्षेत्र में उन दिनों महिकासुर नामक एक राक्षस का आतंक था। उस राक्षस ने उस पूरे क्षेत्र में आतंक मचा कर रखा था। समस्त जनता उस राक्षस के आतंक से परेशान थी। उन्होने भगवान परशुराम से सहायता मांगी तथा भगवान परशुराम तथा राक्षस के बीच काव नामक स्थान पर युद्ध हुआ।

''महीपाल वहां से जीवित भाग जाने में सफल हो गया। यंहा भगवान पर भगवान परशुराम ने कामाक्षा माता की आराधना तथा स्थापना की। इसी स्थान से वर्तमान भूण्डा महायज्ञ की परम्परा का आरम्भ माना जाता है। इस स्थान पर आज भी कुछ ऐसे अवशेष मिलते है जो यहां की ऐतिहासिकता को प्रमाणित करते है। इसमें प्रमुख है भिखल की लकड़ी से बना ढोल जो आकार में बहुत ही बड़ा है।''[2]

इसके पश्चात् परशुराम मायापुर नामक स्थान पर पंहुचे जंहा का वर्तमान नाम 'ममेल' है। परशुराम ने यहां महाकाल की स्थापना 'ममलेश्वर महादेव' के रुप में की है। यहां लगभग 200 ब्राम्हणों को बसाया तथा काव के बाद भूण्डा महायज्ञ का प्रचलन ममेल में हुआ था। ममेल में आखरी बार भूण्डा महायज्ञ विक्रमी संवत् 1840 तदानुसार सन् 1783 में हुआ था। जिसमें प्रयोग किया गया रस्सा आज भी वहां सुरक्षित है। इसके अतिरिक्त परशुराम द्वारा तैयार किया गया गेंहू का ऐतिहासिक दाना, भिखल निर्मित ढोल तथा हवन कुंड आज भी इस स्थान पर विद्यमान है।

मायापुरी के बाद महिकासुर का पीछा करते हुए जब भगवान परशुराम नीर्गतपुर पंहुचे तो वहां उन्होने भगवान सूर्य की आराधना की। इस स्थान को वर्तमान समय में 'नीरथ' नाम से जाना जाता है। यहां

1 नागेन्द्र शर्मा, हिमालय का उतरांचल रामपुर बुशैहर, पृ0–100–101
2 प्रेम लाल से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी।

पर भी परशुराम ने 200 ब्राम्हणों को बसाया था। ममेल के बाद भुण्डा महायज्ञ की परम्परा यहां शुरु हुई। यहां का सूर्य मन्दिर लगभग 1800 वर्ष पुराना है।

नीरथ नामक स्थान से जब महिकासुर भाग रहा था तो भगवान परशुराम ने उस पर अपने फरसे से प्रहार किया था जिसके कारण उसका एक दांत टूट कर गिर गया। इस कारण इस स्थान का नाम 'दन्तनगर' पड़ा। वर्तमान समय में इस स्थान को 'दत्तनगर' के नाम से जाना जाता है। यहां पर परशुराम ने गुरु दतात्रेय की स्थापना की। इस स्थान पर परशुराम ने 300 ब्राम्हणों को बसाया तथा भूण्डा महायज्ञ का आयोजन किया।

परशुराम जी महिकासुर का पीछा करते हुए अपनी तपोभूमि 'श्री पटल' पहुंचे। वर्तमान समय में इस स्थान का नाम निरमण्ड है परन्तु इस स्थान पर भी महिकासुर का वध न हो सका। इसी स्थान पर परशुराम ने अपनी माता रेणुका को श्राद्ध अर्पण किया तथा चार यज्ञों का आयोजन किया।

''निरमण्ड से भागते हुए महिकासुर शामापुरी, इमरापुरी, लायापुरी तथा रामापुरी स्थान पर पंहुचा। परशुराम ने अंत में महिकासुर का वध लायापुरी नामक स्थान में माता मंग्लाकाली के आशीर्वाद से किया। कालान्तर में इन स्थानों को शिंगला, डन्सा, लालसा तथा शनेरी के नाम से जाना जाता है। भगवान परशुराम जी ने जिस स्थान से महिकासुर का पीछा किया तथा जिस स्थान पर राक्षस का वध किया इन सभी स्थानों को 'चार ठहरी पांच स्थान' के नाम से जाना जाता है।''[1] चार ठहरी में वर्तमान समय में शिंगला, शनेरी, लालसा, डन्सा तथा पांच स्थान में काव, ममेल, नीरथ, दत्तनगर तथा निरमण्ड आते है। इन सभी स्थानों में भूण्डा महायज्ञ की प्रथा प्रचलित है।

निष्कर्ष

भूण्डा महायज्ञ में चार ठहरी पांच स्थान के देवी–देवताओं का अत्यन्त महत्व है। इन्ही चार ठहरी पांच स्थान के देवी–देवताओं को सर्वप्रथम महायज्ञ के लिए आमन्त्रित किया जाता है। सर्वप्रथम चार ठहरी पांच स्थान से ही देवी देवता के कलश महायज्ञ में भाग लेने के लिए आते है। उसके पश्चात् ही अन्य व स्थानीय देवी देवताओं को महायज्ञ में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया जाता है। चार ठहरी पांच स्थान के देवी देवताओं के बिना यह महायज्ञ सम्पूर्ण नही हो सकता।

1लोकू देवी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शर्मा, नागेन्द्र, (1996) हिमालय का उतरांचल रामपुर बुशैहर।

मिश्र, शास्त्री लोकनाथ (2002), सतलुज घाटी की सांस्कृतिक पृष्टभूमि, आजाद हिन्द स्टार्ज, एस. सी. ओ. सेक्टर–5 चण्डीगढ़।

साक्षात्कार

1 बिरमा देवी, गांव लालसा रामपुर बुशैहर।
2 लोकू देवी, गांव निरमण्ड।
3 त्रिलोकू देवी, गांव निरमण्ड।
4 कंवर सिंह, गांव दलगांव, रोहडू।
5 प्रेम लाल गौतम, गांव ममेल, करसोग।

Pratibha Spandan